सम्पादकीय

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियंदेवीमुपह्वये श्रीमंदेवीजुषताम्।।

जिस देवी के आगे घोड़े और मध्य में रथ हैं अथवा जिसके सम्मुख घोड़े रथ में जुते हुए हैं, ऐसे रथ में बैठी हुई, हाथियों के निनाद से संसार को प्रफुल्लित करने वाली देदीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देने वाली लक्ष्मी को मैं अपने सम्मुख बुलाती हूँ। दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता वह लक्ष्मी मेरे घर में सर्वदा निवास करे।

धर्म से अर्थ उत्पन्न होता है, धर्म से सुख प्राप्त होता है, धर्म से ही सब कुछ प्राप्त होता है धर्म ही इस संसार का सारतत्व है। रामायण में एक प्रसंग आता है कि नर लीला करते हुए जब भगवान राम को अपनी सुरक्षा के विषय में संदेह होता है तब उन्हें धर्म द्वारा ही रक्षा होने की बात बताई जाती है।

हे राघव! तुम्हारी सुरक्षा के लिए मैं क्या करू? निश्चित रूप से केवल धर्म ही तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम जिस धर्म का धैर्य और नियम के साथ पालन करते आये हो, वही धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा। धर्म ही संपूर्ण विश्व को प्रतिष्ठित एवं स्थिर करने वाला है। धर्मशील के पास ही प्रजाजन जाते हैं, धर्म से ही पाप दूर होता है, धर्म में सबकी प्रतिष्ठा है, इसी कारण धर्म को सबसे बड़ा व श्रेष्ठ कहा गया है।

आज जीने की परिस्थितियां इतनी विपरीत हो गई है कि आम आदमी के लिए सुकून पाना अत्यंत ही दुष्कर कार्य हो गया है। और जब-जब इन दुष्कर कार्यों से वातावरण दूषित हुआ है, तथा जब-जब धर्म की हानि हुई है तब-तब धर्म की रक्षा के लिए ईश्वर ने किसी न किसी रूप में आकर धर्म की रक्षा की तथा इस समाज को दूषित वातावरण से मुक्त कर धर्म का उत्थान किया। जीवन में सुख और दुःख दोनों ही भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र के समान घूमते रहते हैं और सुख-दुःख के कारक हैं यही नवग्रह, जो मनुष्य को अपनी स्थिति द्वारा सुख-दुःख के फल देते हैं।

प्रकाश ज्ञान का द्योतक है और दीप साधना का प्रतीक। ज्ञान और साधना के द्वारा ही जीवन और संस्कृति में शील, सौन्दर्य एवं समृद्धि की अधिष्ठात्री माँ महालक्ष्मी की प्रतिष्ठा की जाती है। प्रज्ज्वलित दीप मालिकाएं सजग साधना की द्योतक है। हमारी कामना यही होती है कि हमारे जीवन का पल-पल इस दीप साधना के आलोक से प्रकाशित हो और हमारा मन एवं जीवन लक्ष्मी की विभूति से परिपूर्ण हो। यही लक्ष्मी पूजन का लक्ष्य है और धर्म उस साधना की पीठ है।

एक तरफ दीपावली सुख समृद्धि की कामना का त्यौंहार है, तो दूसरी तरफ यह पर्व स्वच्छता शुचिता से भी जुड़ा है। गौर करें तो समृद्धि और सफाई एक-दूसरे के पूरक हैं, उस सर्वशक्ति, जो कि दुनिया की संचालक है, का प्रभाव हर कहीं है। धारणा है कि हमारे घरों के हर कोने में देव निवास करते हैं।

लक्ष्मी चंचल है। वह चंचल होते हुए भी चतुर है। कहते हैं जहां छल-कपट-चालाकी रहती है, वहां लक्ष्मी नहीं रहती। लक्ष्मी की आराधना आस्था के साथ करो वह अवश्य आएगी।

समय है जागने का, जागो। नए दिन का नया सूर्य आपके स्वागत के लिए खड़ा है। स्वीकारो उसके प्रकाश को, स्वयं की वास्तविकता को ताकि जगत में जो भोर है वह आपके अंतरजगत में प्रवेश कर सकें।

मनुष्य को सृष्टि की सबसे अद्भूत रचना माना जाता है। मानव जीवन अमूल्य है, परंतु क्या हमें इसका एहसास भी है? शायद नहीं! ऐसा इसलिए क्योंकि वर्तमान दुनिया में केवल दुख,अशांति और भ्रष्टाचार ही चारों ओर दिख रहा है। ऐसे में जब हम व्यक्तिगत, व्यावसायिक, नैतिक मूल्यों के क्षरण और शैक्षणिक समस्याओं से जूझ रहे हैं, तब ज्ञानी-गुणी आत्माओं द्वारा हमें एक ही सलाह प्राप्त होती है कि सकारात्मक सोच रखें।

यदि इस विश्व में कुछ अजर-अमर है, तो वह है ज्योतिर्बिंदु आत्मा। इसलिए हम सभी के लिए अंतर्यात्रा करना अनिवार्य है, जिसके बिना हम जीवन रूपी बाह्य यात्रा का सुख नहीं ले सकेंगे। आत्म-अनुभूति हमें सहज ही भूतकाल में की गईं गलतियों को भुलाकर उसे अनुभव के रूप में संजोकर आगे बढ़ने में मदद करती है। जब हम अपनी गलतियों से सीखना शुरू कर देते हैं, तब सही मायने में हमें जीवन का सार समझ में आ जाता है कि जो हुआ अच्छा हुआ। जो हो रहा है वह अच्छा हो रहा है और आगे जो होगा वह भी अच्छा ही होगा इसलिए अपनी गलतियों से सीखने की इच्छाशक्ति जो लोग रखते हैं, वे विफलता को भी सफलता में परिवर्तित कर लेते हैं।

दरअसल, जीवन एक व्यवस्था है। ऐसी व्यवस्था, जो जड़ नहीं चेतन है, स्थिर नहीं, गतिमान है। इसमें लगातार बदलाव भी होने हैं। जिंदगी की अपनी एक फिलासफी है, यानी जीवन-दर्शन। सनातन सत्य के कुछ सूत्र, जो बताते हैं कि जीवन की अर्थवत्ता किन बातों में है। ये सूत्र हमारी जड़ों में हैं। जीवन के मंत्र ऋचाओं से लेकर संगीत के नाद तक समाहित हैं। हम इन्हें कई बार समझ लेते हैं, ग्रहण कर पाते हैं तो कहीं-कहीं भटक जाते हैं और जब-जब ऐसा होता है, जिंदगी की खूबसूरती गुमशुदा हो जाती है। हम केवल घर को ही देखते रहेंगे तो बहुत पिछड़ जाएंगे और केवल बाहर को देखते

रहेंगे तो टूट जाएंगे। मकान की नींव देखे बगैर मंजिलें बना लेना खतरनाक है, पर अगर नींव मजबूत है और फिर मंजिल नहीं बनाते तो अकर्मण्यता है। केवल अपना उपकार ही नहीं परोपकार भी करना है। अपने लिए नहीं दूसरों के लिए भी जीना है। यह हमारा दायित्व भी है और ऋण भी, जो हमें समाज और अपनी मातृभूमि को चुकाना है।

कहते है कि पांच भौतिक तत्वों ने परस्पर मिल-जुलकर इंसान-जैसी अनोखी चीज का निर्माण किया। ये तत्व हैं- मिट्टी, पानी, आग, हवा और आकाश। छोटे-से दिखने वाले दीपक के निर्माण में भी इन्हीं तत्वों-मिट्टी, पानी, आग, हवा और आकाश का योगदान है। इस प्रकार दीया अपनी वर्तिका को हवा की सहेली बनाकर शून्य यानी आकाश में जलता रहता है। दीपक को निर्मित करने में माटी, जल, आग, समीर और गगन बड़े करीने से सहयोग करते हैं। दीपक की लौ हमेशा ऊपर की ओर उठती हैं, जो उन्नति का प्रतीक है। उससे निकला प्रकाश तम को पराजित करता है। इसका गूढ़ अर्थ यही है कि तम की अज्ञानता से परे ज्ञान के प्रकाश की ओर उन्मुख संज्ञान मानव का भी धर्म है। इस तरह दीपक की लौ ज्ञान की महत्ता को स्वीकारने के लिए प्रेरित करती है। दीपक में जलने वाली बाती सफेद रंग की होती है और सफेद रंग पवित्रता, सदाचार तथा शांति का प्रतीक है। बाती स्वयं जलकर दूसरों को अप्रतिम उदाहरण पेश करती है। दीपक में पड़ने वाला तेज जहां स्नेह का प्रतीक है, वहीं मिट्टी का दीपक खुद संरक्षक के रूप को प्रतिबिंबित करता है।

एक दीया होता है, जो नन्हें-मुन्नों से सजे परिवार की आरती में, मंगल कामनाओं के रूप में, बहन के द्वारा संजोया जाता है। और एक दीया होता है जो जिन्दगी की महक से परिपूर्ण, हल्दी से भरे अंग वाली बहू के द्वारा, सुख और समृद्धि की कामना के साथ एक परिवार से दूसरे परिवार में लाया जाता है। एक दीया होता है, जो धरती पर आने वाले नये इंसान के स्वागत में किसी के भी बच्चे के जन्म लेने पर संजोया जाता है और एक दीया होता है जो जिन्दगी की मटमैली स्लेट पर उजले अक्षरों के रूप में भरकर मनुष्य को आगे और आगे बढ़ने की राह दिखाता है। एक दीया होता है, जिसके सहारे विरहिणी अपने पिया की याद में समूची जिन्दगी काट देती है और एक दीया होता है, जिसकी लौ को बीच में लेकर, वर-वधू पहली बार एक दूसरे का मुंह निहारते और बिन बोले एक दूसरे के मन की सारी बात समझ जाते हैं और एक दीया होता है जो जीवन की संपूर्ण पूजा समाप्त होने के पश्चात् प्रभु के चरणों में संजोया जाता है और वह जलकर नहीं, वरन् अपने आपको होम कर ही जिन्दगी की सार्थकता न्यौतता आया है। इन्हीं सब दीयों को जब एक कतार में संजो दिया जाता है तो वह दीपावली का त्यौंहार बन जाता है।

दीपावली की शुभकामनाएं

दीपमालाओं की अनोखी ज्योति इष्टदेवों की मंगल स्तुति,
और पुष्पों के अनेक हार, लाये लक्ष्मीजी को आपके द्वार।।
स्वप्न आपका लक्ष्य साधे, सफलताओं की सुन्दर कविता कहे,
यश सदैव तिलक करे, समृद्धि की सतत् सरिता बहे,
प्रियजनों का साथ रहे, बुजुर्गों का आशीर्वाद रहे,
आपके घर समृद्धि छाये, संग गणेशजी के श्रीलक्ष्मीजी आये,
इस अवसर पर हम खुशियां अपने साथ लिए,
आ पहुंचे हैं आपके द्वार शुभकामनाओं की सौगात लिए,
मंगलमय हो यह त्यौंहार, हृदय की है यही पुकार।

विश्व तंत्र ज्योतिष पत्रिका परिवार

लक्ष्मी उपासना इसी मायने में महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे भुक्ति और मुक्ति दोनों लक्ष्यों की प्राप्ति साधक सहज रूप में कर लेता है। इससे लक्ष्मी और श्री दोनों की ही प्राप्ति होती है। इस प्रकार महालक्ष्मी की उपासना करने वाला जहां वैभव संपन्न होता है, वहीं शांति भी उसके जीवन का सहज अंग हो जाती है। आप श्री संपन्न और लक्ष्मी संपन्न बनें, आप भोग और योग दोनों प्राप्त करें, यही आपको हमारी तरफ से शुभकामनाएं हैं।

एक बार लक्ष्मीजी के लिए स्वयंवर का आयोजन हुआ। माता लक्ष्मी पहले ही मन ही मन विष्णुजी को पति रूप में स्वीकार कर चुकी थी लेकिन नारद मुनि भी लक्ष्मीजी से विवाह करना चाहते थे। नारदजी ने सोचा कि यह राजकुमारी हरि रूप पाकर ही उनका वरण करेगी। तब नारदजी विष्णु भगवान के पास हरि के समान सुन्दर रूप मांगने पहुंच गए। विष्णु भगवान ने नारद की इच्छा के अनुसार उन्हें हरि रूप दे दिया। हरि रूप लेकर जब नारद राजकुमारी के स्वयंवर में पहुंचे तो उन्हें विश्वास था कि राजकुमारी उन्हें ही वरमाला पहनाएगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। राजकुमारी ने नारद को छोड़कर भगवान विष्णु के गले में वरमाला डाल दी। नारद वहाँ से उदास होकर लौट रहे थे तो रास्ते में एक जलाशय में अपना चेहरा देखा। अपने चेहरे को देखकर नारद हैरान रह गये क्योंकि उनका चेहरा बन्दर जैसा लग रहा था।

हरि का एक अर्थ विष्णु होता है और एक वानर होता है। भगवान विष्णु ने नारद को वानर रूप दे दिया था। नारद समझ गए कि भगवान विष्णु ने उनके साथ छल किया। उनको भगवान पर बड़ा क्रोध आया। नारद सीधा बैकुण्ठ पहुँचे और आवेश में आकर भगवान को श्राप दे दिया कि आपको मनुष्य रूप में जन्म लेकर पृथ्वी पर जाना होगा। जिस तरह मुझे स्त्री का वियोग सहना पड़ा है उसी प्रकार आपको भी वियोग सहना होगा। इसलिए राम और सीता के रूप में जन्म लेकर विष्णु और देवी लक्ष्मी को वियोग सहना पड़ा।

समुद्र मंथन वाली लक्ष्मी : समुद्र मंथन से उत्पन्न लक्ष्मी को कमला कहते हैं जो दस महाविद्याओं में से अंतीम महाविद्या है। देवी कमला, जगत पालनकर्त्ता भगवान विष्णु की पत्नी हैं। देवताओं तथा दानवों ने मिलकर, अधिक सम्पन्न होने हेतु समुद्र का मंथन किया, समुद्र मंथन से १८ रत्न प्राप्त हुए, जिनमें देवी लक्ष्मी भी थी, जिन्हें भगवान विष्णु को प्रदान किया गया तथा उन्होंने देवी का पाणिग्रहण किया। देवी का घनिष्ठ संबंध देवराज इन्द्र तथा कुबेर से हैं, इन्द्र देवताओं तथा स्वर्ग के राजा हैं तथा कुबेर देवताओं के खजाने के रक्षक के पद पर आसीन हैं। देवी लक्ष्मी ही इंद्र तथा कुबेर को इस प्रकार का वैभव, राजसी सत्ता प्रदान करती हैं।

रावण की पराजय के बाद विजय-श्री धारण करके कानन-विहारी राम के आयोध्या लौटने की बात हो, यमराज की पूजा कर अकाल मृत्यु की विकृति से बचने की लालसा हो, स्वस्थ बन शतायु वर्ष जीने की चाह में धन्वंतरि की आराधना करनी हो, चौदहवीं की रात में नरकासुर के वध के उपरान्त आनंद मनाना हो, सागर से लक्ष्मी के प्रकट होने की बेहद खुशी हो, कृषि संस्कृत के संवर्द्धन के प्रतीक गोवर्धन की उपासना हो, भाई-बहन की शुचिपूर्ण संबंधों की चरम-परिणति की बेला हो, ये सब इसी दीपक की लौ में आज भी निर्बाध भासमान है। श्रीराम एक अकिंचन बनवासी-से उपेक्षित युवक के रूप में अकेले दीपक की भांति कांटे-कुश, कंकड़-पत्थर भरे-बीहड़ वन में अपने साहस की लौ जलाते घूमते हैं। निर्मम, आततायी एकछत्र सम्राट् रावण से लोहा लेते हैं। अपने बूते अनगढ़, अशिक्षित जनजातियों का एक सुसंस्कृत समाज बनाते हैं और लंका विजय के बाद अपनी विजय का सारा श्रेय वानर, रीछों में बांट देते हैं। दीये का अभेद्य सूर्य वंशीय श्रीराम से है।

भीषण संघर्षों में जीते हुए भी दीपों का नन्हा प्रकाश हमें ज्योतिर्मय करे। इन्हीं कामनाओं के साथ पाठकों, शिष्यों को दीपावली की शुभकामनाएँ, शुभाशीर्वाद।

श्रीमती इन्दू श्रीमाली